इकाई 2 विविध एवं विषयगत वैविध्यपरक रचनाएं

इकाई की रूपरेखा

2.0. उद्देश्य

2.1. प्रस्तावना

2.2. विविध एवं विषयगत वैविध्यपरक रचनाएँ

2.2.1 विषयगत वैविध्यपरक कुछ महाकाव्य

2.2.2 लघुकाव्यों में विषय वैविध्य

2.2.3 गीतिकाव्यों में विषय वैविध्य

2.2.4 आधुनिक संस्कृत में पत्रकारिता

2.3. सारांश

2.4. शब्दावली

2.5. सन्दर्भ ग्रन्थ

2.6. बोध प्रश्न

2.0 उद्देश्य

आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र के प्रथम खण्ड की इस द्वितीय इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप

- 19वी. और 20वीं शताब्दी में की गई विविध रचनाओं का परिचय दे सकेगें।
- प्राचीन संस्कृत साहित्य की रचना परम्परा में विषयस्थापना से आधुनिक विविध रचनाओं में भेद बता सकेगें।
- महाकाव्यों, नाटकों गीतिकाव्यों में प्रयुक्त विषयों की विविधता का परिचय करा सकेगें।
- रूपकों, मुक्तकों आदि में विषयों की विविधता की जानकारी दे सकेगें।
- परम्पर्याप्राप्त विषयों के अतिरिक्त, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना, नारी शक्ति आदि विषयों के प्रयोग से रचित साहित्य का उल्लेख कर सकेगें।

2.1 प्रस्तावना

प्राचीन संस्कृत साहित्य की रचनाओं में भी विषय की विविधता ही होती थी। किन्तु काव्य और नाटक की विधा में 11वीं शताब्दी से लेकर 16 वीं शताब्दी के बाद तक काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की कसौटी पर रचनाएं की गयीं और उनमें विषयों की विविधता भी रही। काव्य नाटक इत्यादि में संक्रान्तिकाल में सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना के विषय ही आये। 18 वीं शताब्दी तक नवीन विषयों का समावेश करने की परम्परा आयी।

19 वीं शताब्दी के रचनाकारों ने पराधीनता के कारण हुई सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक अवनति और उपद्रवों को देखते हुए नये–नये विषयों को चुनाव करके

अनेक रचनाएं समाज के सम्मुख प्रस्तुत कीं। इस काल खण्ड में आधुनिक संस्कृत साहित्य के आलोक में उपन्यास जैसी परमपरा का विकास हुआ।

20 वीं शताब्दी का कालखण्ड आधुनिक संस्कृत साहित्य के लिए बहुत समृद्ध है। इसमें अधिसंख्य महाकाव्य, संदेशकाव्य, रूपक आदि लिखे गये जो तत्कालीन सामाजिक विविध विषयगत विषयों पर आधारित थे। इसी क्रम में निबन्ध लेखन, पत्र लेखन, पत्रकारिता आदि के अतिरिक्त नयी–नयी प्रवृत्तियों का विकसत रूप दिखाई देता हैं विविध विषयगत रचनाओं से सम्बन्धित इस इकाई के अध्ययन से आप आधुनिक संस्कृत साहित्य की परम्परा का उल्लेख करने में सक्षम हो सकेगें।

2.2 विविध एवं विषयगत वैविध्यपरक रचनायें

19 वीं और 20 वीं शताब्दी का कालखण्ड ही मुख रूप से आधुनिक संस्कृत साहित्य के विकास का काल खण्ड है। यह केवल भारत का ही नहीं अपितु विश्व के इतिहास में साहित्यिक सर्जना का नया आयाम है। इसी कालखण्ड में दो विश्वयुद्ध हुए। हिरोशिमा औरा नागाशाकी पर अणुबम के प्रहार से नरसंहार की विकट और दुखद स्थिति उत्पन्न हो गयी भारत स्वतंत्र हुआ किन्तु भारत विभाजन के साथ साम्प्रदायिक उपद्रव भी हुए। गांधी जी की हत्या भी हुई। इस कालक्रम में भारत में विभूतियों ने जन्म लिया और राष्ट्रीय चेतना को जमाने के साथ–साथ समाज की कुरीतियों पर भी प्रकार किया। मानसिक तौर पर पाश्चात्य और भोगवाद दुस्प्रभाव की जंजीर में भी समाज आता गया। चारित्रिक पतन भी हुआ। इन सभी बातों का अन्य भारतीय भाषाओं में विकसित साहित्य की तरह आधुनिक संस्कृत साहित्य में भी देखा जा सकता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य के अनेक रचनाकारों में उत्तम क्षमता का विकास हुआ किन्तु आज भी इस तरह के साहित्य को पढ़ने की प्रवृत्ति का अभाव समाज में खूब दिखाई दे रहा है। वर्तमान में जब कविता मानवीय संवेदना दिखाई दे रहा है। वर्तमान में जब कविता मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति को लक्ष्य बनाकर निर्मित होने लगी है तब भी उसके महत्व का संकट बना हुआ है क्योंकि समीक्षा ग्रन्थ नहीं लिखे जा रहे हैं। केवल प्राचीन लक्षणों पर आधारित किसी महाकाव्य की रचना माने कोई महाकवि नहीं बन जाता इसके लिए नये अर्थ का संयोजन नितान्त अनिवार्य होता है। आज हम जब भी किसी रचना को पढ़ते हैं अथवा उसका मूल्यांन करते हैं तो काव्यालोचन के संस्कार सामने आ जाते हैं। 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध कविता और नई कविता के बीच एक विभाजन की रेखा बनती दिखाई दे रही है। छन्दों और अंलकारों के लिए ब्यामोह होने के बाद भी आधुनिक संस्कृत कवि जन सामान्य के सुख दुःख को अभिव्यक्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। आज संस्कृत जगत को एक ऐसे आचार्य, कवि की आवश्यकता है जो नई कविता को नये प्रतिभानों के अनुसार व्याख्या करके समाज के सम्मुख उजागर करे ताकी विविध विषयों से संकलित काव्यजगत का प्रकाश पाठकों पर पड़ सके। इसी आलोक में आप वैविध्यपरक विषयों में संकलित और रचित विविध कुछ प्रमुख रचनाओं का अध्ययन इस प्रकार करने जा रहे हैं–

2.2.1. विषयगत वैविध्यपरक कुछ महाकाव्य

यद्यापि 19 वीं शताब्दी में भी महाकाव्यों में भी इस प्रकार की स्थितियॉ दिखायी देती हैं किन्तु 20 वीं शताब्दी के कुछ प्रमुख महाकाव्यों में ही हम प्रस्तुत विषय का अध्ययन करेगें–

दयानन्द–दिग्विजय

इस महाकाव्य की रचना अखिलानन्द शर्मा द्वारा की गयी जो उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले में 1880 में जन्मे थे। यह महाकाव्य इंडियन प्रेस प्रयाग से 1906 में प्रकाशित हुआ। इसमें 21 सर्ग हैं। नायाक स्वामी दयानन्द हैं उन्हें भारत के उन्नायक के रूप में कवि इस प्रकार कहा–

मत्कृतं मुनिवरेण भारते भारतोदयकृते शिवंकृतम् ।

भारतोन्नतिनिविष्टचेतसा भारते भवतु तन्भुदे सतीम् 118/92

अर्थात् भारत की उन्नति के लिए दत्तचिन्त मुनिश्रेष्ठ ने भारत में भारत के उदय के लिए जो कल्याण का कार्य किया वह यहॉ सच्चनों को आनन्दित करे।

अहल्याचरित

यह 17 सर्गों का महाकाव्य है इसकी रचना महाराष्ट्री के सखाराम शास्त्री द्वारा की गयी जो गोविन्द रामचन्द्र द्वारा 1927 में सतारा से प्रकाशित किया गया। काशी प्रयास और गया की यात्रा के प्रसंग में अहल्या देवी के द्वारा बनवाये गये धर्मशाला और विष्णुमन्दिर को देखने के बाद इस प्रकार की रचना का संकल्प कवि के मन में आया। इस विधा में कुछ हटकर कवि ने गुय शिष्ट संवाद के रू॰ में 17 सर्गों में अहल्याचरित के अन्तर्गत विविध विषयों का समावेश किया है। शब्द का निर्वचन देखेने योगय है–

पैतृकी वृत्तिरेतेषां हल्याऽसीन्मेषपालिका।
व्यक्त्वा नूनमहल्येमं भविता राष्ट्रपालिका।। 9/36

अर्थात् हल पर आधारित तथा भेड़ पालन वाली उनकी पैत्क जीविका थी, उसे छोड़कर निश्चय ही राष्ट्र का पालन करने वाली यह अहल्या होगी।

सतों के जीवन पर आधारित पण्डिता क्षमाराव के महाकाव्य

क्षमाराव का कालखण्ड 1890 से 1954 तक है महाराष्ट्र में जनमी इस कवयित्री ने राष्ट्रभक्ति और स्वदेश के अभिमान से ओतप्रोत होकर आधुनिक संस्कृत साहित्य में लेखनकार्य किया है। श्रीतुकारामचरित, श्रीरामदासचरित और श्री ज्ञानेश्वरचरित इनके तीन महाकाव्य हैं। इन महाकाव्यों में इन्होंने भारतीय जीवन को परम्परागत नैतिकता, पवित्रता तथा सहजमानव प्रेम की ओर आकृस्ट करने का साहित्यिक प्रयासव किया। 'सत्याग्रहगीता' और 'शंकरजीवनाख्यम्' भी इनके दो महाकाव्य हैं। सत्याग्रहगीता में 1931 से लेकर गॉधी इरविन पैक्ट तक की घटनाओं का वर्णन हैं इस प्रकार क्षमाराव ने गांधी जी के जीवन से लेकर संतो ंके जीवन तक में आने वाले विविध संघर्षों को विषय बनाकर रचनाधर्मिता का पालन किया हैं। कवयित्री ने शंकरजीवनाख्यम् में अपने पिता शंकर पाण्डुरंग के जीवन को ही आधार बनाया और यही विषय नायकत्व के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। इस कृति में पुत्री क्षमाराव को पिता का जो उपदेश है वह देखिए–

यदित्वां सज्जनः कोऽपि सौजन्याद् भोजयेत् क्षमे।
त्दाऽस्मै द्विगुणं दद्याः काले प्रत्युययकारिणी।।

नृपोऽपि चेन्महौदार्यात् प्रयच्छेत् पारितोषिकम्।
नेव तत्प्रतिगृह्णीयास्तदनर्हाऽसि चेत् क्षमे।।

यदि कश्चिन्मुनुष्यस्ते हिंसां कुर्यात् सुचेतसा।
कुय तथ्य प्रियं भूयस्तदानृज्यं भजस्व च।।

थ्दष्ट्वा तु यदि विधां ते वितरेत् पण्डितः क्वचित्।
सर्वथाडनुग्रहं तस्य प्रतीक्ष परमादरात् ।।

अर्थात् अरि क्षमा, यदि कोई सज्जन तुझे सौजन्य से भोजन कराये तो उनहें अवसर प्राप्त होने पर प्रत्युपकार के रूप में दुगुना दें। राजा भी यदि बहुत ही उदारता के साथ आपका पारितोषिक दे तो उसे यदि आप पाने के योग्य नहीं हैं, तो न लें। यद देवयोग से कोई विद्यान आकर आपको विधादान देता है तो परम आदरपूर्वक सभी प्रकार से उसे उसका अनुग्रह करें। इसके आगे 1880 से 1977 के बीच भगवदाचार्य ने (स्यालकोट) श्रीमहात्मागान्धिचरित 25 सर्ग जिसमें गांधी जी के जन्म से लेकर दाण्डी यात्रा तक का वर्णन है, पारिजातापहार 29 सर्ग जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन की घटनाएं लिखी गयी हैं, पारिजातसौरभ, 20 सर्ग जिसमें गॉधी जी के मृत्यु तक की घटनाओं का वर्णन है। उक्त तीनों विभाजन महात्मागांधि–चरित महाकाव्य के ही हैं।

इसी क्रम में महाकाव्यकारों में काशीनाथ द्विवेदी 1897 से 1969 का नाम आता है, जिन्होंने रूक्भिणीहरण महाकाव्य लिखा। 1898 में जन्में देवरिया जनपद के उमापतिशर्मा द्विवेदी ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इन्होंने पारिजातहरण नामक महाकाव्य लिखा। कविपति के नाम से जाने गये। इसके अलावा बल्लभद्रप्रसाद शास्त्री उत्तर प्रदेश हरदोई का 1975 में प्रकाशित बारह सर्गों में रचित 'नेहययशसौरभ' महाकाव्य लिखा जिसमें नेहरू के राष्ट्रीयचरित का वर्णन है। महाराष्ट्र के विश्वनाथ केशवछत्रे 1906 ने 'सुभाषचरित' महाकाव्य एवं 'नाथचरित' महाकाव्य, सातवलेकर चरित का निर्माण 1983 में किया। यह रचना नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के त्यागमय जीवन पर आधारित है जिसमें कवि ने राष्ट्र के अपमान से दुःखी जनता को बंधन से छुड़ाने का बलिदान करने वाले नेताजी के बलिदान की गाथा को वर्ण विषय के रूप में रखा है।

उत्तर प्रदेश के बालकृष्ण भट्ट वर्तमान उत्तराखण्ड ने 27 सर्गों का कनकपंश महाकाव्य लिखा। जो चार भागों में क्रमशः 1952, 1954, 1961, 1969 में प्रकाशित हुआ। स्वतंत्र भारतम् नाम का खडकाव्य भी इन्होंने लिखा। इन रचनाओं का विषय गढ़वाल के परमारवंशीय नरेश कनकपाल और मानवेंद्र शाह की गाथा में वर्णित हैं।

सत्यव्रत शास्त्री (1930)

ये लाहोर के हैं, 'इन्द्रागॉधीचरितम्' श्रीरामकीर्ति महाकाव्य, गुरूगोविन्द सिंह चरित आदि रचनाएं हैं। शास्त्री जी ने यह कार्य नये तरीके से विषयों की उपास्थापना करके ही किया है।

रेवाप्रसाद द्विवेदी (1935)

इन्होंने स्वातत्रसम्भव की रचना की जो 28 सर्गों का विशाल महाकाव्य है। इसमें महारानी लक्ष्मीबाई से लेकर इन्दिरागांधी तक की भारत में घटी घटनाओं को

ऐतिहासिक आधार देते हुए कवि ने पूरे महाकाव्य में विषयों को उपस्थापित किया है। महाकाव्य में नवीन प्रवृत्तियों के साथ की गयी रचनाओं की बहुत बड़ी सूची है जिनमें रसिकविहारी जोशी, रामावतार मिश्र, राजेन्द्र मिश्र, पी0के0 नारायण पिल्लई, सुबोधचन्द्र पंत, विद्याधर शास्त्री, पी0सी0 देवस्य, निगम बोध तीर्थ, द्विजेंद्र लाल शर्मा, पद्मशास्त्री, हरिनारायण दीक्षित, विजेन्द्रनाथ शास्त्री, नारायाण शास्त्री, छज्जूराम शास्त्री, भवानीदत्त शर्मा, काशीनाथ पाण्डेय, रामकुबेर मालवीय, शन्तिभिक्षु शास्त्री, श्रीनिवास रथ, दीगम्वर महापात्र, पशुपति झॉ, बलभद्र शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, आदि के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं।

2.2.2 लघुकाव्यों में विषयवैविध्य

19 वीं और 20 वीं शताब्दी की परिस्थितियों में संस्कृत लघुकाव्य की विधायें विकसित हुईं। समाज के बदलते मूल्यों और रूपों के परिप्रेस्य में संस्कृत कवियों ने छोटे से कथासूत्र को ग्रहण करके प्रबंधात्मक काव्य भी लिखा, विषय की विविधता की दृष्टि से इस काल के संस्कृत लघुकाव्यों का अध्ययन किया जाय तो जिन विविध विषयों को अधिकृत करके ये रचनायें की गई उनहें सबसे पहले पौराणिक कथाओं पर आश्रित काव्य के रू‍प में देखा जायेगा जिसमें हेम चनद्रराम कृत 'परषुरामचारितम्' स्वयंप्रकाश शर्मा शास्त्रीकृत 'इन्द्रयक्षीयकाण्यम्' आदि आयेगें।

देवस्तुतिपरक लघुकाव्यों या काव्यों की संख्या बहुत है, इनमें कवि ने मूर्तिरूपी देवों, तीर्थों नदियों, गुरूओं का स्तवन करके अपने उद्‌गार व्यक्त किये हैं। अभिराव राजेन्द्र कृत 'पराम्बाशतकम्' 'श्रीयुगलशतदलम्' नलीमी शुक्ला कृत 'भावांजलि' श्रीभाष्यम् विजयसारथि कृत मंदाकिनी आदि आते हैं। राष्ट्र भक्ति परक काव्यों में 19 वीं शताब्दी के अंतर्गत आधुनिक कवियों ने राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले साहित्य की सर्जना किया। 1857 के विद्रो के परिप्रेक्ष्य में वासुदेवशास्त्री वागेवाडिकर ने 'क्रान्तियुद्धम' तथा वी0 गोपालकृष्ण भट्‌ट ने महाराज्ञीय झॉसीलक्ष्मीबाई नामक महाकाव्य लिखा इसी प्रकार पण्डिताक्षमाराव ने सत्याग्रहगीता, उत्तर सत्याग्रह गीता, स्वराज विजयः जैसे लधुकाव्यों की रचना करके गॉधी जी के सत्याग्रह आंदोलन को पूरे विश्व के सामने रखा। इस क्रम में के0एस0 नागराजन का भारतभेभवम्, शिवदत्तमिर का 'भारतवर्षः', महादेशास्त्री का 'भारतशतकम्' जैसे राष्ट्रपरक काव्य उल्लेखनीय हैं। पण्डित यज्ञेश्वर शास्त्री कृत 'भारतराष्ट्र रत्नम्' रीमधभास्करकृत 'श्रमगीता' डॉ0 रमाकान्त शुक्लकृत 'भातिमेभारतम्' आदि भारत की महिला गाने वाले राष्ट्रपरक लघुकाव्य हैं। भारत की स्वतंत्रता सेनानियों, महापुरूषों, धार्मिक नेताओं, राजनेताओ के जीवन को आधार बनाकर कवियों ने अनेक लघुकाव्य, महाकाव्य लिखे जिनमें पण्डित जयराम शास्त्री का श्रीगांधिवान्धवम्, यर्णेकर की 'जवाहररंगिणी,' रामशरण शास्त्री का ' जवाहर जीवनभ्' आदि प्रमुख हैं।

इसी प्रकार सामाजिक समसयामूलक रचनाएं भी की गयीं हैं। आतंकवाद, नारीदुर्दशा, दहेजप्रथा, भ्रष्टाचार आदि को अधिकृत करके मुक्त तक पद्यों के अतिरिक्त इस धारा में काव्य लिखे गये, आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में उमाकान्त शुक्ल का भावमय काव्य 'कूहा' सरोजीनी देवी का ' स्त्रीशिक्षालयम्' आदि उल्लेखनीय हैं। इसी तरह लघुकाव्य की विधा में शुद्ध रसात्मककाव्य, प्रकृतिवर्णनपरक काव्य और संदेश काव्य आदि भी प्राप्त हैं। अनयोक्तिपरक काव्य में आधुनिक कवियों में मथुरा प्रसाद की 'अन्योक्ति तरंगिणी' अभिराजराजेन्द्र की आर्यान्योक्तिशतकम् रामकरणशर्मा की 'वीणा' 'संन्धा' एवं 'शिवसुकीयम्' काव्य उल्लेखनीय हैं। इस कालखण्ड में हासयपरक व्यंगपरक काव्यों की भी कमी नहीं है। कवियों ने प्रतिदिन गिरते राष्ट्रीय चरित्र, भ्रष्टाचार तथा स्वतंत्रता

प्राप्ति के दुरूपयोग आदि विषयों को केन्द्रित करके हासय व्यंग में प्रकट किया है जैसे एम0पी. सम्पतकुमार आचार्य में 'काफी' जैसे विषय पर 'काकीपानीयम्' तथा श्रीरंगम्वेकटेश्वर ने 'कॉफीशतमम्' लघु काव्य लिखा हासय व्यंग को विषय बनाकर कुछ लिखे गये काव्य ये भी हैं–

शैलताताचार्यन्कृत 'कपीनामुपनासः' नागेश शास्त्री कृत 'नर्मसप्तशती', प्रशस्यमित्र शास्त्री कृत 'हास सिलास':, वनेश्वर पाठक–कृत 'हाहा–हूहू शतकम' आदि प्रमुख हैं।

रूद्रदेव त्रिपाठी, कृष्णलाल, राजेंद्र मिश्र, देवदत्त भट्ट आदि की रचनाओं में व्यंग का स्वर मुखर है। 'मुद्गरद्तम' तथा 'वानरसन्देशः' व्यंगविधा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

हिंदी भाषा की भॉति यात्रावृत्त भी संस्कृत रचना विधा में ग्रहीत हुआ जिसमें वैदेषिक यात्रा वृतान्त का उल्लेख समीचीन हैं। इस विधा के प्रमुख काव्य हैं–

सत्यव्रतशास्त्री कृत ''शर्मण्यवेशः सुतरां विभाति'' तथा ''थाईदेश– विलासस्, राजेन्द्र मिश्र कृत बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्, डॉ. रमाकान्त शुक्ल कृत भाति मौरीशसम। इसी क्रम में विमानकाव्य की भी अवतारणा हुयी। कवियों ने विमान से जो यात्राएं किया, उनके विषय में भी मुक्तक कविताएं तथा लघुकाव्य लिखा। इनमें प्रभाकर कवडेकर का ''भूलोकविलोकनम्'', राधावल्लभ त्रिपाठी का धरित्रीदर्शनम् तथा राजेन्द्रद्रमिश्र का विमान–यात्राशतकम् उल्लेखनीय है।

लघुकाव्यों की विषय वैविध्यता के आलोक में अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के भावों से सम्बद्ध वर्णनपरक रचनां भी हुईं। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के चलते रहने पर राजनीतिक मंचों पर हुयी घटनाओं को कवियों ने विषय बनाया और लघुकाव्य लिखे। केरलवर्भ वलिय कोइत्तुरान कृत ''विक्टोंरियाचरितम्'', अप्पाशास्त्री राशिवडेकर कृत उद्हमहोत्सवम् तथा राधाकृष्ण गोस्वामीकृत ''वैवाहिकवर्णनम्''आदि उल्लेखनीय हैं। इसमें प्रिंस ऑफ वेल्स का विवाह वर्णित है। शिवराम पाण्डेय का एडवर्डराज्याभिषेकदरबारम्, जार्जाभिषेकदरबारम् आदि काव्य रचनाओं में अन्तराष्ट्रीय चेतना के विषयों का समावेश करके कवियों ने आधुनिक विषयों की ओर साहित्य को दिशा दी। लेनिन और मार्क्स का समाजवादी चिन्तन संस्कृत कविता में आया। पद्मशास्त्री ने 'लेनिनामृतम'' लिखा। केवलानन्द शर्मा ने 'लेनिनकुसुभान्जलिः'' लिखा। शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी ने कार्लमार्क्सशतकम् लिखा। रघुनाथ चतुर्वेदी ने प्रसिद्ध नाटककार गोको के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर ''मेक्सिसगोर्कीपन्चशती'' लिखा। नये राष्ट्रके उदय पर बंगलादेश के लिए रमेशचन्द्र शुक्ल ने ''बंगलादेशः '' काव्य की रचना कर दी। इसी प्रकार छन्दोमुक्त निर्वन्धकाव्य एवं बालकाव्य की विधा भी आयीं जिसमें विभिन्न रचनाएं की गयी। संस्कृत में बालसाहित्य नहीं था। वासुदेव द्विवेदी शास्त्री ने बालकवितावली लिख, रामकिशोर मिश्र ने बालचरितम् लिखा। बालसंस्कृतम् तथा चन्दामामा आदि संस्कृत पत्रिकाओं में भी विविध विषय रखे गये। इतना ही नहीं लधुकाव्य की विधा के अनतर्गत स्वरूप के अनुसार भी शतक काव्य लिखे गये जिनमें हास्य व्यंग्य से लेकर अनेक विषयों के समावेश हुए। संस्कृत जगत के आधुनिक साहित्य में सौ श्लोकों के शतक काव्य तथा सात सौ श्लोकों के सप्तशती काव्य लिखे गये। इन काव्यों में देवस्तुति, लोकनीति, राष्ट्रभक्ति, यात्रावृत्त, हास्यव्यंग आदि का समावेश हुआ। जिनमें गिरिधर शर्मा कृत गिरिधर सप्तशती, शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी कृत स्फूर्तिसप्तशती, राजेन्द्रमिश्र कृत अभिराजस्प्तशती उल्लेखनीय है। लघुकाव्य विधा में

लहरीकाव्य की एक तकनीकी विधा है जो विषय पर आधारित न होकर रचना वैशिष्ट्य पर आधारित होती है। लघुकाव्यों के साथ लहरी शब्द को जोड़कर रखा गया। भक्ति, प्रेम, राष्ट्रीय भावना, युगचेतना आदि इन काव्यों के विषय रहे हैं। पण्डिताक्षमाराव की मीरालहरी, प्रकाशशास्त्री की भाव लहरी, वैशम्पायन की 'ज्वाहरगंगा लहरी', गोपीनाथ की 'काशी लहरी' और राधावल्लभ त्रिपाठी का 'लहरीदशकम्' उल्लेख करने योग्य है। इतना ही नहीं संस्कृत पद्य रचना में विविध आयामों में चित्रकाव्य परम्परा में 'प्रहेलिका प्रश्नोत्तर', चित्ररचना, समस्यापूर्ति आदि का समावेश किया। भट् मथुरानाथ शास्त्री ने 'साहित्य वैभव' एवं 'जयपुर वैभव' नामक काव्यों में 'आकारचित्र शैली' का विस्तार किया। इस विधा में देवी प्रसाद कृत 'चित्रोपहार काव्य', दामोदर मिश्रकृत 'चित्रकावंध काव्य' रामचन्द्रनकृत 'रामचरितचित्रकाव्य,' रूद्रदेव त्रिपाठी कृत 'चित्रांलंकारचन्द्रिका' आदि गणनीय है। नीतिसूक्तिपरक काव्यों, प्रकीर्ण काव्यों, अनुदित काव्यों, आदि में विविध विषयगत रचनाएं हुईं।

2.2.3 गीतिकाव्यों में विषय वैविध्य

20 वीं शताब्दी में गीतिकाव्यों की रचनाओं में संस्कृत कविता ने राष्ट्रीय धारा का स्वरूप ग्रहण किया जिसमें राष्ट्रीयता, राष्ट्रबोध और भारतीय संस्कृति का परिप्रेक्ष्य प्रमुख है। समाज और राष्ट्र्की स्थिति कवियों की दृष्टि में चिंता का विषय रही, 15 अगस्त 1872 से 5 दिसम्बर 1950 तक श्री अरविन्द का कार्यकाल माना जाता है। भवानीभारती नामक उनकी रचना में भोग और वैराग्य, गृहस्थी और राष्ट्र्सेवा के द्वन्द्व में कवि के द्वारा भारती का साक्षात्कार किया जाता है। इस रचना में प्रत्येक देशवाली को शिक्षित करने का प्रयास किया गया है। महात्मा गॉधी के सत्याग्रह आंदोलन तथा उनके जीवन दर्शन के कारण देश की अधिकांश जनता प्रभावित हुई। यही विषय आगे चलकर गीतिकाव्यों का विषय बना जिसमें पण्डिताक्षमाराव की तीन रचनाएं प्रसिद्ध हुईं। सत्याग्रह गीता, उत्तरसत्याग्रहगीता, उत्तर जय सत्याग्रह आंदोलन तथा उनके जीवनदर्शन के कारण देश की अधिकांश जनता प्रभावित हुई। यही विषय आगे चलकर गीतिकाव्यों का विषय बना जिसमें पण्डिताक्षमाराव की तीन रचनाएं प्रसिद्ध हुईं। सत्याग्रह गीता, उत्तरसत्याग्रहगीता, उत्तरजयसत्यग्रहगीता तथा स्वराज्य विजय हैं। प्रतीकात्मक गीतिकाव्य भी रचे गये। नयी–नयी शैली के नये–नये प्रयोग दिखाई देने लगे। पुरातन शैली की भॉति नयी शैली की रचनाएँ आधुनिक रूप में आने लगीं। संस्कृत में गीति की नई विधा का विकास हुआ जिसमें वैयक्तिक भावना, रूमानियत और स्वच्छन्दमनस्थितियों का चित्रण हुआ। गीतिविधा में शिल्पविधान और बिम्ब विधान जैसी नवीनता भी आईं जिसे मायाप्रसाद त्रिपाठी ने प्रारम्भ किया। 19 वीं शताब्दी में तो शोकगीति की विधा भी चल पड़ी। दीपकघोष नामक कवि के द्वारा विलाप काव्यों की रचना की गई। सानेट की विधा भी संस्कृत कविता में आयी, इनका प्रकाशन 'उत्तमसंग्रह कलापिका' (1969 ई0 कलकत्ता) में प्रकाशित हो चुका है। यही नहीं रागकाव्यों की विधा में संस्कृत में माझियों के गीत और डिस्को के गीत भी लिखे गये हैं। संस्कृत गीतिविधा में गजल का भी विकास हुआ। भट्टमथुरानाथ शास्त्री ने 1987 ई0 में प्रकाशित अपनी गीतिवाणी नामक पुस्तक में 'उर्दूभाषाचतवर' नाम का एक खण्डसमाविष्ट किया जिसमें 58 गजलगीतियॉ हैं। इनके बाद जानकी वल्लभ शास्त्री ने संस्कृत में गजल लिखी। लोकप्रिय गजल लिखने वाले वर्तमान कवि अभिराज राजेंद्र जीवित हैं। जगन्नाथ पाठक का नाम भी इस विधा में आता है। राजेन्द्र मिश्र की

गजलगीतियों में 'रदीफ' काफिये का संयोजन किया गया है। गजल की उत्कृष्ट विधा में पण्डित बच्चूलाल अवस्थी की गीतियॉ अपेक्षाकृत उत्कृष्ट हैं।

स्वामीनाथ पाण्डेय का जन्म बलियॉ जिले के कुरेग गॉव 1937 ई0 में हुआ था। इनके द्वारा रचित संस्कृतगीतों में वेदना और सामाजिक स्थितियों का सजीव चित्रण मिलता है। पण्डित जानकीवल्लभ शास्त्री, बटुकनाथ शास्त्री, रतिनाथ झॉ, परमेश्वर अयर, हरिदतत पालीवाल आदि अनेक कवि आते हैं जिनकी रचनाओं में विषय की विविधता देखी जा सकती है। जगन्नाथ पाठक की 'कपिशायनी'में मधुशाला के प्रतीक के द्वारा वैयक्तिक प्रेम, अनुभूति के उदाहरण भरे पड़े हैं।

राजेंद्र मिश्र का जन्म जौनपुर जिले के द्रोणीपुर गॉव में 26 दिसम्बर 1943 में हुआ। इन्होंने लोकगीत विधाओं में 'चैत्रकम् (चैती) 'सूतीगृहगीतम' (सोहर),'स्कन्धहारीयम्' (कहरवॉ),नक्तकम्' (नकता),प्रचारगीतम् (पचरा), आदि लिखकर अनेक प्रकार के विषयों का समावेश करते हुए संस्कृत की आधुनिक विधा को आगे बढ़ाया। इस क्रम में पुष्पादीक्षित का नाम भी आता है जिनका जन्म 12 अगस्त 1943 को जबलपुर में हुआ था। इनकी रचनाओं में भी विषय की विविधता देखी जा सकती है। अग्निशिखा नामक रचना में इन्होंने 48 गीतों में वंदना की तीव्रता, सामाजिक स्थिति, बिडम्बनाओं आदि का विविध विषय के रूप में समावेश है। हरिदत्त शर्मा और राधावल्लीा त्रिपाठी भी उल्लेखनीय हैं। विन्धेश्वरी प्रसाद मिश्र की रचनाओं में भी इस प्रकार का वैशिष्ट्रय पाया जाता है। महाराजदीन पाण्डे की रचनाओं में विषय वैविध्य देखिये। इनका जन्म 20.11.1956 में हुआ है। ये गोण्डा के हैं। इनकी रचनाओं में सामाजिक अन्याय एवं विसंगतियों पर प्रहार किया गया है। मौनवेधः में संकलित कविताओं में 'नभस्यास्ते गुरूम्मन्याः में यह कहते हैं–

पदं लीह्वा पदं प्राप्ताः
वन्चनेः सम्पदं प्राप्ताः
चाटु वचनै पटूनामनुपदं ये सन्तत शरण्याः। पृष्ठ 8

अर्थात् जो पद की प्राप्ति पैर को चाटक, स्थान या ओहदा प्राप्त कर चुके हैं, वन्चनों से सम्पत्ति को प्राप्त कर चुके हैं और चाटुवचनों से पटु–जनों के पत्र–पग पर निन्तर शरणगत है। 'धर्मनिर्मोकं दधानाः शीर्षक मुक्त छनद में लिखी कविता में भी पाखण्ड की विडम्बना की गई है।

महाराजादीन पाण्डेय ने इसी क्रम में भारत में नैतिक मूल्यों के ह्रास, सामाजिक विषमता, शोषण और बढ़ती हुई अमानवीयता को भी अपनी कविता के माध्यम से उद्घाटित किया है। अनेक गषल–गतियों में वैयक्तिक वेदना को भी कवि ने व्यक्त किया है। असंस्कृत शब्दों का कहीं–कहीं खटकने वाला प्रयोग भी इन्होंने अपनी गीतियों में किया है, यथा–

करे घृत्वा लालटेनम् , ईश्वरं ढुण्ठाभि', 'पृष्ठ 17 रेवाप्रसाद द्विवेदी की कविता में आंचलिकता का बहुत समावेश मिलता है। इन्होंने अपने जन्म स्थान, नादनेर गॉव के वातावरण को वहॉ के दुहलदेव नामक ग्राम देवता को, मातामाई को ही नहीं बल्कि छप्पर से बनी वहॉ की कोठरियों को भी छायाचित्रात्मक शैली में निबद्ध करके काव्यात्मक रूप प्रदान किया है। ग्रामीण जीवन में प्रचलित शब्दों या लोकभाषा की पदावली का प्रयोग रेवाप्रसाद द्विवेदी बहुत करते हैं–

नारीणं वसनानि यत्र लहंगा चोली सशाटी, शिरो–

भूषायै ननु रेखड़ी, गुण शतैः केशेषु सन्नद्धता।

यासां वै कटिदोरकेण विपुलाभोगेन संशोभितं

भण्यं तन्त्रति सार्थकीकृतविधौ मध्यप्रदेशश्रुतौ।।

इसी प्रकार वैविध्यपरक विविध विषयगत रचनाओं की लम्बी श्रृंखला है जिनमें अनेक कवियों के नाम सूचीबद्ध हैं। महाकाव्य, लघुकाव्य,गीतिकाव्य से लेकर नाट्यसाहित्य, पत्र–पत्रिकाएं आदि रची गयीं जिनमें पुरातन शैली और विषयों के अलावा 20वीं शताब्दी में उत्पन्न समाजिक, राष्ट्रीय समस्याएं और गिरते हुए मानव मूल्यों को प्रतिबिम्बित किया गया है।

2.2.4 आधुनिक संस्कृत में पत्रकारिता, लघुकथा, नवयुगीन कथा, आत्मकथा, पत्रसाहित्य।

संस्कृत पत्रकारिता के प्रारम्भ होने के बाद पत्रिकाओं में छूटी कहानी के प्रकाशन का प्रारम्भ हुआ। इसी को संस्कृत लघुकथा का प्रकाशन कहा जाता है। इनके विषयों से समाज को परिचित कराने का योगदान केवल संसकृत की पत्र–पत्रिकाओं को है। इस आलोक में अप्पाशास्त्री और भट् मथुरानाथ शास्त्री के कालखण्ड में क्रमशः संस्कृत चनिद्रका और संस्कृतरत्नाकर तथा भारती जैसी पत्रिकाएं थीं जिनमें अनेक कहानियॉ प्रकाशित हुईं। यद्यपि 1898 ई0 में चन्द्रिका के प्रकाशन का छमॅ वर्ष था जिनके प्रथम अंक में विज्ञप्ति निकाली गयीं की यदि 300 ग्राहक यदि सहमत हों तो पत्रिका का आकार बड़ा कर दिया जाए जिससे अरेबिननाईट्स के कहानियों का क्रमिक प्रकाशन हो, अलीफ लैला धारावाहिक का अनुवाद भी छपे किन्तु वर्णनों से यह पता चलता हे कि यह योजना सफल नहीं हो पायी। अप्पाशास्त्री के काल में 'अरेबियन नाईट्स की कथा में' भारतीय पाठकों को प्रिय हो गयीं थी। कहानियों का यह क्रम पत्रकारिता में चलता गया इसमें बोध कथायें भी आईं।

लघुकथा में अप्पाशास्त्री रासिवडेकर इनकीं कहानियों में जो मनोरंजक कहानियॉ हैं वे इस प्रकार हैं–

मणिकुंडलोपाख्यान, दधीच्युपाख्यान, पोराणिकी काचित्कथा।

पौराणिक कथानकों पर आधारित दशापरिणति, चित्रकारचातुर्यम्, कुटिलमतिर्नाम गौभायुः, बकचापलम्, भगवद्भक्तः, किमर्थं सइगुरूः शिक्षाप्रद कथायें हैं। प्राधान्यपाः, ''धिड्मुम्धे

विप्रलब्धाडसि', ''श्रीमतीविधासुन्दरी देवी'' आदि सामाजिक कथायें हैं। इनके अतिरिक्त 'वेषमाहत्म्यम्, पुरोहितधौर्त्यम्, व्यसनविमोक्षः आदि मनोरंजक कहानियॉ हैं।

सन् 1900 ई0 में मेदपल्ली वेंकटरभणाचार्य की ''शेक्सपीयर नाटक कथावली'' प्रकाशित हुई जो मेरी लैम्ब के ''टेतस फ्राम शेक्सपीयर'' नामक सुप्रसिद्ध गद्यकथाग्रन्थ के अनुवाद के रूप में निकली। इसी वर्ष केरल वर्ग वलीय कोईतम्बुरान् का सामाजिक कथाओं का संकलन ''कथा संग्रह'' भी निकला। ''इस क्रम में बाल पाठ्य सामग्री के रूप में कहानियों के अनेक संकलन 20वीं शताब्दी में निकले जिनका क्रम भारत में कहीं न कहीं आज भी बना है।

नवयुगीन कथा की विधा में भी विविध विषयगत रचनाएँ पायी जाती हैं। संस्कृत साहित्य परिषद नामक पत्रिका में आर रगांचार्य की एक कहानी ''आई0सी0एस0 जामाता'' नाम का उल्लेख मिलता है जो विशुद्ध रूप से हास्य का उदाहरण है। इसमें ''आई0सी0एस0 दामाद अपने को उँचा दिखाने का हास्यास्पद प्रयास करता है, इसी बात का वर्णन है। इस कहानी की भाषा नये प्रयोगों की है जैसे–

''ग्रावस्त्रावं विलेपुः अथवा स मुण्डः कूठमाण्डपातं पतितः''।

ऐसी ही एक कहानी ''अहो कनीभान् ग्रामीणः (1937–38) में प्रकाशित हुई। ''नगरपरिचालन सभा'' जो रंगाचार्य द्वारा लिखित है प्रकाशित हुई जिसमें नगरपालिका के चुनाव के लिए एक वृद्ध महिला तथा एक अन्य महिला खड़ी होती है। चुनावी भ्रष्टाचार और जोड़ तोड़ के बारे में इस प्रसंग में अच्छा चित्रण है। ''संस्कृतसाहित्य परिषद पत्रिका (1935–37) में शिवशंकरशास्त्री द्वारा लिखित –नलिनीवसनतम्' कहानी प्रकाशित हुई जिसमें रोमियों जूलियट की शैली में नलिनी और बसन्त की प्रेमकथा लिखी गयी है। वस्तुवैविध्य और शैली वैविघ्य में चौथे दशक के लेखकों में बी0वरदराज शर्मा की कथायें उल्लेखनीय हैं जिनमें ''कस्यायभपराथः'' (सं.सा.प. पत्रिक 1936–37) ''किमिदीाकूतम्'' (1937–38,) '' गर्ते पतेत् क्रोधनः'' (1937–38), ''किं स्वतंत्रता अहाअनाथाः '' 1939–4. ''कस्याहम्'' ? 1938–40 आदि नई चेतना से अनुप्राणित हैं। ''कस्यायमराधः'' और ''किं स्वतंत्राः'' दोनों कथाएँ तत्कालीन रूढ़िबद्ध समाज द्वारा अबलाओं पर किये जा रहे अत्याचारों तथा रूढ़ियों में जकड़ी नारी की विवशता का कारूणिक चित्र उपस्थित करती है। 'कसयायम– पराधः'' की नायिका विधवा है, अन्ततः उसे शरीर बेचने को विपश होना पड़ता है उसकी उक्त कहानी का जीवन दर्शन स्पष्ट करती है–

''स्त्रीत्वभेव निन्दाभषनम्। न विद्याा, न स्वाधीना वृत्तिः न वाडर्जनशक्तिः। स्त्रियों नाम पुरूषैः परवतयः। विष्ट दोषेण यदि या कादपि विधवात्वभापाद्यते, कथन्तरा खिलीक्रियते।

अवृतितकार्जिता हि स्त्री प्रदुब्येत्, स्थितिभत्यपीति बिभ्यति धार्मिकाः। सति चैवमनावामशरणनामकिंचनां न गेहाद् विद्रवयन्ति। न ताभ्योडशं दितसन्ति। क्षते क्षारार्पणमिव सामुदायिकेभ्यो बहिस्कुर्वते मूर्त्तममंगलं मन्यन्ते। न बीध्याभवि संचरितण्यभ्। परिणाधसी परा भूमिः। कष्टानामन्त्या काष्ठा। शुनीमिव न्यक्कुर्वन्ति। भुजगीमिव परिहरन्ति काष्ठा। शुनीमिव न्यक्कुर्वन्ति। भुजगीमिव परिहरन्ति। किं न तस्या आसते बाह्याभ्यन्तराणि करणानि? कामादयोवा?''

''गर्ते पतेत् क्रोधनः'' तथा ''कस्याहभ्'' में तीखे व्यंग के माध्यम से सामाजिक स्थितियों पर प्रहार किया गया है। संस्कृत जगत में आत्मकथायें भी लिखी गयी हैं। यद्यपि प्रकाशित आत्मकथाओं के बारे में संख्या की दृष्टि से कम जानकारी मिलत है फिर भी प्राप्त वर्णनों के आधार पर कुछ इस प्रकार हैं– ''गॉधी जी की आत्कथा और बाणभअ्ट की आत्मकथा जिस प्रकार हिन्दी उपन्यास शैली में लिखे गयें उसी प्रकार कानाि शास्त्री ने ''सांस्कृततोषसिकाया'' आत्मकथा लिखी है। इसमें एक महिला की किशारावस्था से यौवन तक की आत्मकाि का वर्णन है। पण्डित हृषिकेश भट्ाचार्य ने ''आत्मवायोरूदभारः'' लिख जो आत्मकथा है। लगता है उनका यह शीर्षक ऑटोबायोग्राफी के समानान्तर है। उपनयास शैली में अनेक आत्मकथा है। लगता है उनका यह शीर्षक आयबायाग्राफी के समानान्तर है। उपन्यास शैली में अनेक आत्मकथा में मिलती हैं जिनमें मंगलदेव शास्त्री, रमेशचन्द्र शुक्ल आदि के नाम लिये जाते हैं।

पत्रसाहित्य में भी विषयों की विविधता में पायी गयीं हैं। इस क्रम में निरजाराजा जयसिंह और शिवाजी के बीच का संस्कृत भाषा में पत्राचार माना जाता है। सवाई जयसिंह नरेश के समय से ''कृष्ण की राधा परकीया थी या स्वकीया'' इस विषय पर विद्वानों में एक विमर्श हुआ था जिसमें राजा ने विद्वानों के अभिमत मागें थें। पण्डित श्यामाचरण सुबलानन्द, जगन्नाथ, गोपीरमण आदि का पत्र संस्कृत गद्य के माध्यम से लिखा हुआ मिलता है जिसमें कृष्ण और राधा के सनातन सम्बन्धों का चित्रण है। चैतन्य सम्प्रदाय के किसी विद्वान का एक पत्र जयपुर नरेश को भेजा गया। वहाँ के रिहायशी पुस्तकालय में ''पौथीखाना'' में उपलब्ध है। किन्तु संस्कृत साहित्य के इतिहास में पत्रलेखन के विषय में पद्यात्मक के उदाहरण अधिक मिलते है। जैसे आर्याछन्द में शकुन्तला का दुष्यन्त को पत्र लिखा गया है। इस प्रकार बाणभट्ट ने कादम्बरी में पुण्डरीक का महाश्वेता को पत्र भी आर्याछन्द में ही लिखवाया गया। संस्कृतचंद्रिका में अप्पाशास्त्री राशिवडेकर ने यह प्रथा चलाई थी कि किसी पाठक विशेष की जिज्ञासा किसी भी बिन्दु पर यदि होती है और यदि पत्र द्वारा उसे उसने अभिव्यक्त किया है तो वह पत्र ही छाप दिया जाता था। उत्तर में भी यदि समाधान आता था तो उसे भी छाप दिया जाता था। ऐसे पत्रों के विचारों के आदान–प्रदान का एक विशिष्ट और मौलिक अपकर्षण उद्भूत हो जाता था। जैसे, संस्कृत चंद्रिका चन्द्रिका के नवम वर्ष में किसी जिज्ञासु से शंका की थी कि किरातार्जुनीय के दशम सर्ग के 13 वें श्लोक में ''सद्शभतनुभाकृतैः प्रयत्नं'' इत्यादि में मल्लिनाथ ने एकावली अलंकार बतला दिया है जो ठीक नहीं लगता। इसका उत्तर तिरूवल्लुवर के अ0नारायण शर्मा ने अपने पत्र दिनांक आश्विन वदि 30 को दिया। इसे तथा इसके सहभाभी पत्र को अप्पाशास्त्री ने नवभवर्ष के अन्तिम संयुक्तांक में अविकलक्षप दिया (''प्राप्त पत्र द्वयभ्'' शीर्षक से) सहयोगी पत्र यों है– गुरूभ्यों नमः।

शुभकृत–विरूवालूर आश्विनवदि 30 स्वस्ति श्रीकत कोल्हापुरनगरे संस्कृतचन्द्रिकायाः सहकारिसंयादकान् तत्रभवतो महाशयान् अप्पशस्तिविधावाचपस्तीन् नारायण शर्मा सप्रणामं प्रार्थयते। यथा–अतीतायां चन्द्रिकायां के नापि जिज्ञासुना किरार्जुनीथयद्यस्थ सदृशमतन्वित्यस्य व्याख्यांयां महामहापाध्यायमल्लिनाथकृतायां यदाशंकि तत्र यथामति यदधो मया लिख्यते तद् यदि प्रकटनाहं भवेत् तर्हि पत्रिकायां तस्यावकाशदानेन माभार्योडनुग्रहण् न्त्विति। सर्वं शिवम्। भवां विधेयो अ. नारायण शर्मा इत्यादि।

इस प्रकार पत्रों के माध्यम से संदेश व्यक्त करना और उन संदेशो में विविध प्रकार के विषयों का होना ही इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक संस्कृत में रचना प्रक्रिया की परम्परा उत्कर्ष को प्राप्त हुइ है जिसमें समसामयिक सामाजिक गुण–दोष भी विषय विवेचन का रूप प्राप्त किये हैं।`

2.3 सारांश

आपने इस इकाई में आधुनिक संस्कृत–साहित्य में गद्य–रचन, पद्य रचना और नाट्य रचना की नवीन विधाओं का अध्ययन कर लेने के बाद विविध विषयगत नवीन रचना प्रवृत्तियों को जाना हैं परम्परा से प्राप्त विधाओं में कुद रचनाएं काव्यशास्त्रीय मर्यादाओं के अनुरूप की गयी हैं तो कुछ ऐसी भी हैं जो भारत की पराधीनता में उपजी हुई सामाजिक परिस्थितियों पर अवलम्बित हैं। 20 वीं शताब्दी में तो स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन दोनों कालखण्डों में सामाजिक राष्ट्रीय परिवेश के अनुरूप ही रचनाएं रची गयी हैं। जिनमें एक ओर महाकाव्यों की विषय परम्परा में

कहीं सामाजिक–राष्ट्रीय अगुआ की प्रशस्तिपरक रचनाएं हुईं। बीसवीं शताब्दी के भारत में स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, अरबिन्द, चंद्रशेखर आजाद सुभाषचन्द्रबोस आदि पर तो महाकाव्य तो लिखे ही गए बल्कि इन्दिरा, नेहरू पर भी बाकी नहीं रहा। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और पूर्वार्द्ध दोनों कालखण्डों में लघुकाव्य की विधा का विकास हुआ। इस विधा में सैकड़ो, रचनाएँ की गयीं जो भारत के लगभग उत्तरी–दक्षिणी सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कहीं के संत के चरित पर लघुकाव्य लिखा गया तो कहीं के स्थानीय राजा के आचार व्यवहार पर। राष्ट्रीय आंदोलन के लिए हो रहीं नितनूतन घटनाओं को कथानक बनाकर कवियों ने अधिसंख्य लघुकाव्यों की रचना कर दी। इन लघुकाव्यों में विषयों का वैविध्य भरा पड़ा है। इसी प्रकार युगीन काव्य भी बहुत लिखे गए। लघुकाव्य के बाद गीतिकाव्य रचना की विधा में मात्रात्मक रूप से अपेक्षाकृत अधिक रचनाएं हुई हैं जो तकनीकी परिवेश से आच्छादित पाठकों के सम्मुख नहीं आ पा रही हैं। हास्य और व्यंग्य को अधिकृत करके अपने–अपने क्षेत्रों की घटनाओं, परम्पराओं को सम्बद्ध करके आधुनिक कवियों, कथानक का रूप देकर रचनाएं प्रस्तुत की हैं। यात्रावृत्त, आत्मकथा की रचनाएं भी इसमें सहायक हैं। इस परम्परा में आधुनिक विधा और विषय वैविध्य के लिए गजलों का योगदान भी अभूतपूर्व है । कवियों ने अपने द्वारा की गयी वैदेषिक यात्राओं के अवसर पर विदेश में जो देखा–सुना उसे विषय बनाकर शतम काव्यों की रचनाएं कीं। यही नहीं पत्रकारिता भी आधुनिक संस्कृत –साहित्य के पल्लवन में योगदान करती है। अतः इस इकाई के अध्ययन के बाद आप परम्परा के अतिरिक्त उसके साथ–साथ विविध विषयगत रचनाओं का उल्लेख कर सकेगें।

2.4 शब्दावली

1. परम्परा से महाकाव्यों, नाटकों, गीतिकाव्यों आदि की रचनाओं में काव्यशास्त्रीय मर्यादा के अनुसार विषय होते थे जो विषय के रूप में रचनाओं में होने चाहिए।
2. वैविध्यपरक– रचनाओं में केवल परम्परा के निर्धारित मानविन्दुओं के अनुसार ही विषय का ग्रहण न करना, बल्कि समसामयिक घटनाओं को भी रचनाओं में स्थान देना वैविध्यपरक कहलाता है।
3. लघुकाव्य– जिसका आकार–प्रकार महाकाव्य से छोटा हो।
4. गीतिकाव्य– ऐसी रचना जिसे गीतात्मक शैली में लिखा गया हो।
5. पल्लवन– विकास।

2.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1) संस्कृत वाड्.मय का वृहद इतिहास, सप्तम खण्ड, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास। प्रधान सम्पादक श्री बलदेव उपाध्याय प्रकाशन– उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ।

2) संस्कृत वाड्.मय का वृहद् इतिहास। पंचम–खण्ड–गद्य। प्रधान सम्पादक – बलदेव उपाध्याय। प्रकाशन – उ0 प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ।

2.6 बोध प्रश्न

1. उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में विविध विषयगत महाकाव्य विषयक वर्णन कीजिए।
2. लघुकाव्य की विधा में बीसवीं शताब्दी के वैविध्यपरक रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. विविध विषयगत रचनाओं का आधुनिक संस्कृत साहित्य की विकास यात्रा में क्या योगदान है? निरूपण कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY